मूक प्रेम की व्यथा,
तुम क्या जानो, हे मानव.!
तू तो कुछ भी कर गुजरता है,
अपने झूठे प्रेम की खातिर.!

सारी क़ायनात उठा लेते हो,
अपने प्रेम के पागलपन में,
जरा यह भी तो सोच, कि,
हमारी क्या ख़ता है..?

दिल तो हमारे भी धड़कते है,
प्रेम तो हम भी करते है,
चुम्बन मेरे हिस्से भी आता है, और
प्रेम-किलोल भी तो हम करते है..!

फ़र्क़ इतना ही समझ आता है,
तुम मानव जब जी आये, अपनी कर लेते हो,
हमारे बीच या तो दीवार खींच देते हो, या फिर,
गले में जंजीर डाल मौन करवा देते हो..!

जितना तेरे हिस्से का प्रेम बचता हो,

उतना ही दे दे, हमे,

उसी से जी लेंगे,

अपने प्रेम से मिल लेंगे..!